

سُورَةُ فُصِّلَتْ؟

Surah 41 — Fussilat (Explained in detail) · Meccan · 54 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

हा मीम

2

تَنْزِيلٌ مِّنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

(ये किताब) रहमान व रहीम खुदा की तरफ से नाज़िल हुई है ये (वह) किताब अरबी कुरान है

3

كِتَابٌ ۚ فَصَّلَتْ ءَايَاتُهُ ۚ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا ۚ لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ

जिसकी आयतें समझदार लोगों के वास्ते तफ़सील से बयान कर दी गयीं हैं

4

بَشِيرًا ۚ وَنَذِيرًا ۚ فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ

(नेको कारों को) खुशख़बरी देने वाली और (बदकारों को) डराने वाली है इस पर भी उनमें से अक्सर ने मुँह फेर लिया और वह सुनते ही नहीं

5

وَقَالُوا ۚ قُلُوبُنَا فِيْ أَكِنَّةٍ ۚ مِّمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ وَفِيْ ءَاذَانِنَا وَقْرٌ ۚ وَمِنْ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ ۚ فَأَعْمَلْ إِنَّا عَمِلُونَ

और कहने लगे जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो उससे तो हमारे दिल पर्दों में हैं (कि दिल को नहीं लगती) और हमारे कानों में गिर्दानी (बहरापन है) कि कुछ सुनायी नहीं देता और हमारे तुम्हारे दरमियान एक पर्दा (हायल) है तो तुम (अपना) काम करो हम (अपना) काम करते हैं

6

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَىٰ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ ۖ وَحْدٌ ۖ فَاسْتَقِيمُوا ۚ إِلَيْهِ
وَأَسْتَغْفِرُوهُ ۚ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ

(ऐ रसूल) कह दो कि मैं भी बस तुम्हारा ही सा आदमी हूँ (मगर फ़र्क ये है कि) मुझ पर 'वही' आती है कि तुम्हारा माबूद बस (वही) यकता खुदा है तो सीधे उसकी तरफ मुतावज्जे रहो और उसी से बख़्शिश की दुआ माँगो, और मुश्रिकों पर अफसोस है

7

الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَفِرُونَ

जो ज़कात नहीं देते और आखेरत के भी कायल नहीं

8

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۚ

बेशक जो लोग ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम करते रहे और उनके लिए वह सवाब है जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं

9

ۚ قُلْ أَنتُمْ لَتَكْفُرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ ۚ أَنْدَادًا ۚ ا ۚ
ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ

(ऐ रसूल) तुम कह दो कि क्या तुम उस (खुदा) से इन्कार करते हो जिसने ज़मीन को दो दिन में पैदा किया और तुम (औरों को) उसका हमसर बनाते हो, यही तो सारे जहाँ का सरपरस्त है

10

وَجَعَلَ فِيهَا رَوْسِيَٰ مِّنْ فَوْقِهَا وَبَرَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَتَهَا فِي ۚ أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ ۚ سَوَاءً ۚ
لِّلسَّائِلِينَ

और उसी ने ज़मीन में उसके ऊपर से पहाड़ पैदा किए और उसी ने इसमें बरकत अता की और उसी ने एक मुनासिब अन्दाज़ पर इसमें सामाने माईशत का बन्दोबस्त किया (ये सब कुछ) चार दिन में और तमाम तलबगारों के लिए बराबर है

11

ثُمَّ أَسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ ۚ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ۚ ا
قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ

फिर आसमान की तरफ मुतावज्जे हुआ और (उस वक्त) धुएँ (का सा) था उसने उससे और ज़मीन से फरमाया कि तुम दोनों आओ खुशी से ख्वाह कराहत से, दोनों ने अर्ज़ की हम खुशी खुशी हाज़िर हैं

12

فَقَضَيْنَهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ ۚ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۚ وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ
الدُّنْيَا بِمَصْبِيحٍ وَحِفْظٍ ۗ ا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ

(और हुक्म के पाबन्द हैं) फिर उसने दोनों में उस (धुएँ) के सात आसमान बनाए और हर आसमान में उसके (इन्तेज़ाम) का हुक्म (कार कुनान कज़ा व क़दर के पास) भेज दिया और हमने नीचे वाले आसमान को (सितारों के) चिरागों से मज़य्यन किया और (शैतानों से महफूज़) रखा ये वाकिफ़कार ग़ालिब खुदा के (मुकरर किए हुए) अन्दाज़ हैं

13

فَإِنْ أَعْرَضُوا ۚ فَقُلْ أَنْذَرْتُكُمْ صُعِقَةً ۚ مِثْلَ صُعِقَةِ عَادٍ ۚ وَثُمُودَ

फिर अगर हम पर भी ये कुफ़्फार मुँह फेरें तो कह दो कि मैं तुम को ऐसी बिजली गिरने (के अज़ाब से) डराता हूँ जैसी क्रौम आद व समूद की बिजली की कड़क

14

إِذْ جَاءَتْهُمْ الرُّسُلُ مِنْ ۚ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوا ۚ إِلَّا اللَّهَ ۚ قَالُوا ۚ لَوْ
شَاءَ رَبُّنَا لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً ۚ فَإِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ ۚ كَافِرُونَ

जब उनके पास उनके आगे से और पीछे से पैग़म्बर (ये ख़बर लेकर) आए कि खुदा के सिवा किसी की इबादत न करो तो कहने लगे कि अगर हमारा परवरदिगार चाहता तो फ़रिश्ते नाज़िल करता और जो (बातें) देकर तुम लोग भेजे गए हो हम तो उसे नहीं मानते

15

فَأَمَّا عَادٌ ۚ فَاسْتَكْبَرُوا ۚ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوا ۚ مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۚ أُولَٰئِكَ
يَرَوْنَ ۚ أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ ۚ وَكَانُوا ۚ بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ

तो आद नाहक़ रूए ज़मीन में गुरूर करने लगे और कहने लगे कि हम से बढ़ के कूवत में कौन है, क्या उन लोगों ने इतना भी ग़ौर न किया कि खुदा जिसने उनको पैदा किया है वह उनसे कूवत में कहीं बढ़ के है, गरज़ वह लोग हमारी आयतों से इन्कार ही करते रहे

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا ۖ صَرْصَرًا ۖ فِي أَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ ۚ لِّنُذِيقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزَىٰ ۚ وَهُمْ لَا يُنصَرُونَ

तो हमने भी (तो उनके) नहूसत के दिनों में उन पर बड़ी ज़ोरों की आँधी चलाई ताकि दुनिया की ज़िन्दगी में भी उनको रूसवाई के अज़ाब का मज़ा चखा दें और आखेरत का अज़ाब तो और ज्यादा रूसवा करने वाला ही होगा और (फिर) उनको कहीं से मदद भी न मिलेगी

وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا ۚ أَلْعَمَىٰ عَلَى الْهُدَىٰ فَأَخَذَتْهُمُ صَاعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُونِ
بِمَا كَانُوا ۚ يَكْسِبُونَ

और रहे समूद तो हमने उनको सीधा रास्ता दिखाया, मगर उन लोगों ने हिदायत के मुकाबले में गुमराही को पसन्द किया तो उन की करतूतों की बदौलत ज़िल्लत के अज़ाब की बिजली ने उनको ले डाला

وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَكَانُوا يَتَّقُونَ

और जो लोग ईमान लाए और परहेज़गारी करते थे उनको हमने (इस) मुसीबत से बचा लिया

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ

और जिस दिन खुदा के दुश्मन दोज़ख की तरफ हकाए जाएँगे तो ये लोग तरतीब वार खड़े किए जाएँगे

حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَرُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

यहाँ तक की जब सब के सब जहन्नुम के पास जाएँगे तो उनके कान और उनकी आँखें और उनके (गोشت पोस्त) उनके खिलाफ उनके मुकाबले में उनकी कारस्तानियों की गवाही देंगे

وَقَالُوا ۚ لَجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدْتُمْ عَلَيْنَا ۚ قَالُوا ۚ أَنْطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ

और ये लोग अपने आज़ा से कहेंगे कि तुमने हमारे खिलाफ क्यों गवाही दी तो वह जवाब देंगे कि जिस खुदा ने हर चीज़ को गोया किया उसने हमको भी (अपनी कुदरत से) गोया किया और उसी ने तुमको पहली बार पैदा किया था और (आखिर) उसी की तरफ लौट कर जाओगे

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَرُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ

और (तुम्हारी तो ये हालत थी कि) तुम लोग इस ख्याल से (अपने गुनाहों की) पर्दा दारी भी तो नहीं करते थे कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारे आज्ञा तुम्हारे बरखिलाफ गवाही देंगे बल्कि तुम इस ख्याल में (भूले हुए) थे कि खुदा को तुम्हारे बहुत से कामों की खबर ही नहीं

وَذَلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدَاكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخُسِرِينَ

और तुम्हारी इस बदख्याली ने जो तुम अपने परवरदिगार के बारे में रखते थे तुम्हें तबाह कर छोड़ा आखिर तुम घाटे में रहे

فَإِنْ يَصْبِرُوا ۖ فَالِنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَإِنْ يَسْتَعْتِبُوا ۖ فَمَا هُمْ مِنَ الْمُعْتَبِينَ

फिर अगर ये लोग सब्र भी करें तो भी इनका ठिकाना दोज़ख ही है और अगर तौबा करें तो भी इनकी तौबा कुबूल न की जाएगी

ۚ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا ۚ لَهُمْ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا خُسِرِينَ

और हमने (गोया खुद शैतान को) उनका हमनशीन मुकर्रर कर दिया था तो उन्होंने उनके अगले पिछले तमाम उमूर उनकी नज़रों में भले कर दिखाए तो जिन्नात और इन्सानो की उम्मतें जो उनसे पहले गुज़र चुकी थीं उनके शुमूल (साथ) में (अज़ाब का) वायदा उनके हक़ में भी पूरा हो कर रहा बेशक ये लोग अपने घाटे के दरपै थे

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَا تَسْمَعُوا ۚ لِهَذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوَا ۚ فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ

और कुफ़्फ़ार कहने लगे कि इस कुरान को सुनो ही नहीं और जब पढ़ें (तो) इसके (बीच) में गुल मचा दिया करो ताकि (इस तरकीब से) तुम ग़ालिब आ जाओ

فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ عَذَابًا ۚ شَدِيدًا ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

तो हम भी काफ़िरों को सख्त अज़ाब के मज़े चखाएँगे और इनकी कारस्तानियों की बहुत बड़ी सज़ा ये दोज़ख है

ذَلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ ۚ جَزَاءٌ ۚ بِمَا كَانُوا ۚ بِأَيَّتِنَا يَجْحَدُونَ

खुदा के दुश्मनों का बदला है कि वह जो हमरी आयतों से इन्कार करते थे उसकी सज़ा में उनके लिए उसमें हमेशा (रहने) का घर है,

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ رَبَّنَا أَرْنَا الَّذِينَ أَضَلَّلْنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلُهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ

और (क़यामत के दिन) कुफ़्कार कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार जिनों और इन्सानों में से जिन लोगों ने हमको गुमराह किया था (एक नज़र) उनको हमें दिखा दे कि हम उनको पाँव तले (रौन्द) डालें ताकि वह खूब ज़लील हों

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا ۚ رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَمُوا ۚ تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا ۚ وَلَا تَحْزَنُوا ۚ وَأَبْشِرُوا ۚ بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ

और जिन लोगों ने (सच्चे दिल से) कहा कि हमारा परवरदिगार तो (बस) खुदा है, फिर वह उसी पर भी क़ायम भी रहे उन पर मौत के वक्त (रहमत के) फ़रिश्ते नाज़िल होंगे (और कहेंगे) कि कुछ ख़ौफ न करो और न ग़म खाओ और जिस बेहिश्त का तुमसे वायदा किया गया था उसकी खुशियां मनाओ

نَحْنُ أَوْلِيَآؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهَى أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ

हम दुनिया की ज़िन्दगी में तुम्हारे दोस्त थे और आख़ेरत में भी तुम्हारे (रफ़ीक़) हैं और जिस चीज़ का भी तुम्हारे जी चाहे बेहिश्त में तुम्हारे वास्ते मौजूद है और जो चीज़ तलब करोगे वहाँ तुम्हारे लिए (हाज़िर) होगी

نُزُلًا ۚ مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ ۚ

(ये) बख़्शने वाले मेहरबान (खुदा) की तरफ़ से (तुम्हारी मेहमानी है)

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا ۖ مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا ۖ وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ

और इस से बेहतर किसकी बात हो सकती है जो (लोगों को) खुदा की तरफ बुलाए और अच्छे अछे काम करे और कहे कि मैं भी यकीनन (खुदा के) फरमाबरदार बन्दों में हूँ

وَلَا تَسْتَوِ الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ ۖ كَأَنَّهُ ۖ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ۚ

और भलाई बुराई (कभी) बराबर नहीं हो सकती तो (सख्त कलामी का) ऐसे तरीके से जवाब दो जो निहायत अच्छा हो (ऐसा करोगे) तो (तुम देखोगे) जिस में और तुममें दुश्मनी थी गोया वह तुम्हारा दिल सोज़ दोस्त है

وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا ۚ وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ۚ

ये बात बस उन्हीं लोगों को हासिल हुई है जो सब्र करने वाले हैं और उन्हीं लोगों को हासिल होती है जो बड़े नसीबवर हैं

وَأِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ ۖ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ ۖ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۚ

और अगर तुम्हें शैतान की तरफ से वसवसा पैदा हो तो खुदा की पनाह माँग लिया करो बेशक वह (सबकी) सुनता जानता है

وَمِنْ ءَايَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ
وَأَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ

और उसकी (कुदरत की) निशानियों में से रात और दिन और सूरज और चाँद हैं तो तुम लोग न सूरज को सज्जदा करो और न चाँद को, और अगर तुम खुदा ही की इबादत करनी मंज़ूर रहे तो बस उसी को सज्जदा करो जिसने इन चीज़ों को पैदा किया है

فَإِنْ أَسْتَكْبَرُوا ۖ فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ ۖ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْمُونَ ۚ

पस अगर ये लोग सरकशी करें तो (खुदा को भी उनकी परवाह नहीं) वो लोग (फ़रिश्ते) तुम्हारे परवरदिगार की बारगाह में हैं वह रात दिन उसकी तसबीह करते रहते हैं और वह लोग उकताते भी नहीं

وَمِنْ ءَايَاتِهِ ۚ إِنَّكَ تَرَى الْأَرْضَ خُشْعَةً ۚ فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ۚ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتَى ۚ إِنَّهُ ۚ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

उसकी कुदरत की निशानियों में से एक ये भी है कि तुम ज़मीन को खुश्क और बेआब ओ गयाह देखते हो फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं तो लहलहाने लगती है और फूल जाती है जिस खुदा ने (मुर्दा) ज़मीन को ज़िन्दा किया वह यक़ीनन मुर्दों को भी ज़िलाएगा बेशक वह हर चीज़ पर कादिर है

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي ءَايَاتِنَا لَا يَخْفُونَ عَلَيْنَا ۚ أَفَمَنْ يُلْقَى فِي النَّارِ خَيْرٌ أَمْ مَنْ يَأْتِي ءَامِنًا يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ أَعْمَلُوا ۚ مَا شِئْتُمْ ۚ إِنَّهُ ۚ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

जो लोग हमारी आयतों में हेर फेर पैदा करते हैं वह हरगिज़ हमसे पोशीदा नहीं हैं भला जो शख्स दोज़ख में डाला जाएगा वह बेहतर है या वह शख्स जो क़यामत के दिन बेखौफ व खतर आएगा (खैर) जो चाहो सो करो (मगर) जो कुछ तुम करते हो वह (खुदा) उसको देख रहा है

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ ۚ وَإِنَّهُ ۚ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ

जिन लोगों ने नसीहत को जब वह उनके पास आयी न माना (वह अपना नतीजा देख लेंगे) और ये कुरान तो यक़ीनी एक आली मरतबा किताब है

لَا يَأْتِيهِ الْبُطْلُ مِنْ ۚ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۚ ۚ تَنْزِيلٌ ۚ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ۚ

कि झूठ न तो उसके आगे फटक सकता है और न उसके पीछे से और खूबियों वाले दाना (खुदा) की बारगाह से नाज़िल हुई है

مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ ۚ وَذُو عِقَابٍ ۚ أَلِيمٌ

(ऐ रसूल) तुमसे से भी बस वही बातें कहीं जाती हैं जो तुमसे और रसूलों से कही जा चुकी हैं बेशक तुम्हारा परवरदिगार बख्शने वाला भी है और दर्दनाक अज़ाब वाला भी है

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْءَانًا أَعْجَمِيًّا لَقَالُوا ۖ لَوْلَا فُصِّلَتْ ءَايَاتُهُ ۖ ءَا ۖ عَجْمِيٌّ ۚ
وَعَرَبِيٌّ ۚ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ هُدًى وَشِفَاءٌ ۖ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِى
ءَاذَانِهِمْ وَقْرٌ ۚ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۚ أُو۟لَٔئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍ ۖ بَعِيدٍ ۚ

और अगर हम इस कुरान को अरबी ज़बान के सिवा दूसरी ज़बान में नाज़िल करते तो ये लोग ज़रूर कह न बैठते कि इसकी आयतें (हमारी) ज़बान में क्यों तफ़सीलदार बयान नहीं की गयी क्या (खूब कुरान तो) अजमी और (मुखातिब) अरबी (ऐ रसूल) तुम कह दो कि ईमानदारों के लिए तो ये (कुरान अज़सरतापा) हिदायत और (हर मर्ज़ की) शिफ़ा है और जो लोग ईमान नहीं रखते उनके कानों (के हक़) में गिरानी (बहरापन) है और वह (कुरान) उनके हक़ में नाबीनाई (का सबब) है तो गिरानी की वजह से गोया वह लोग बड़ी दूर की जगह से पुकारे जाते हैं

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَآخْتَلَفَ فِيهِ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ ۖ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُضِي
بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِى شَكٍّ ۖ مِنْهُ مُرِيبٍ ۚ

(और नहीं सुनते) और हम ही ने मूसा को भी किताब (तौरैत) अता की थी तो उसमें भी इसमें एख्तेलाफ किया गया और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक बात पहले न हो चुकी होती तो उनमें कब का फैसला कर दिया गया होता, और ये लोग ऐसे शक़ में पड़े हुए हैं जिसने उन्हें बेचैन कर दिया है

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا ۖ فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۖ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَمٍ ۖ لِلْعَبِيدِ

जिसने अच्छे अच्छे काम किये तो अपने नफे के लिए और जो बुरा काम करे उसका वबाल भी उसी पर है और तुम्हारा परवरदिगार तो बन्दों पर (कभी) ज़ुल्म करने वाला नहीं

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۖ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرَاتٍ ۖ مِنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ
أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۖ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَآئِى قَالُوا ۖ ءَاذَنُكَ مَا مِنَّا مِنْ
شَهِيدٍ ۖ

क़यामत के इल्म का हवाला उसी की तरफ है (यानि वही जानता है) और बगैर उसके इल्म व (इरादे) के न तो फल अपने पौरों से निकलते हैं और न किसी औरत को हमल रखता है और न वह बच्चा जनती है और जिस दिन (खुदा) उन (मुशरेकीन) को पुकारेगा और पूछेगा कि मेरे शरीक कहाँ हैं- वह कहेंगे हम तो तुझ से अर्ज़ कर चूके हैं कि हम में से कोई (उनसे) वाकिफ़ ही नहीं

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا[؟] يَدْعُونَ مِنْ قَبْلُ[؟] وَظَنُّوا[؟] مَا لَهُمْ مِنْ مَّحِيصٍ[؟]

और इससे पहले जिन माबूदों की परसतिश करते थे वह गायब हो गये और ये लोग समझ जाएंगे कि उनके लिए अब सुखलिसी नहीं

لَا يَسْمُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِنْ مَسَّهُ الشَّرُّ فَيُوسٍ[؟] قَنُوطٌ[؟]

इन्सान भलाई की दुआए मांगने से तो कभी उकताता नहीं और अगर उसको कोई तकलीफ पहुँच जाए तो (फौरन) न उम्मीद और बेआस हो जाता है

وَلَيْنُ أَذَقْنَهُ رَحْمَةً[؟] مِنَّا مِنْ[؟] بَعْدِ ضَرَاءٍ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً[؟] وَلَيْنُ رُجِعْتُ إِلَى رَبِّي إِنَّ لِي عِنْدَهُ[؟] لِّلْحُسْنَى[؟] فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا[؟] بِمَا عَمِلُوا[؟] وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ[؟]

और अगर उसको कोई तकलीफ पहुँच जाने के बाद हम उसको अपनी रहमत का मज़ा चखाएँ तो यकीनी कहने लगता है कि ये तो मेरे लिए ही है और मैं नहीं खयाल करता कि कभी क़यामत बरपा होगी और अगर (क़यामत हो भी और) मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाया भी जाऊँ तो भी मेरे लिए यकीनन उसके यहाँ भलाई ही तो है जो आमाँल करते रहे हम उनको (क़यामत में) ज़रूर बता देंगे और उनको सख्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَ بِجَانِبِهِ[؟] وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَاءٍ عَرِيضٍ[؟]

(वह अलग) और जब हम इन्सान पर एहसान करते हैं तो (हमारी तरफ़ से) मुँह फेर लेता है और मुँह बदलकर चल देता है और जब उसे तकलीफ़ पहुँचती है तो लम्बी चौड़ी दुआएँ करने लगता है

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهِ[؟] مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍ[؟]

بَعِيدٍ[؟]

(ऐ रसूल) तुम कहो कि भला देखो तो सही कि अगर ये (कुरान) खुदा की बारगाह से (आया) हो और फिर तुम उससे इन्कार करो तो जो (ऐसे) परले दर्जे की मुखालेफत में (पड़ा) हो उससे बढ़कर और कौन गुमराह हो सकता है

سُنُرِيهِمْ ءَايَتِنَا فِي اَلْءَاَفَاقِ وَفِي اَنْفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ اَلْحَقُّ ۚ اَوَلَمْ يَكْفِ
بِرَبِّكَ اَنَّهُ ۚ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ

हम अनकरीब ही अपनी (कुदरत) की निशानियाँ अतराफ (आलम) में और खुद उनमें भी दिखा देंगे यहाँ तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि वही यक़ीनन हक़ है क्या तुम्हारा परवरदिगार इसके लिए काफी नहीं कि वह हर चीज़ पर क़ाबू रखता है

اَلَا اِنَّهُمْ فِي مَرِئَةٍ ۚ مِّنْ لِّقَاءِ رَبِّهِمْ ۚ اَلَا اِنَّهُمْ ۚ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ۚ

देखो ये लोग अपने परवरदिगार के रूबरू हाज़िर होने से शक़ में (पड़े) हैं सुन रखो वह हर चीज़ पर हावी है